अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

शोधार्थी
जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष
हिन्दी विभाग, पीएच.डी
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

21 वीं में आधुनिक तकनीकी का विकास हुआ , जिसके कारण एक तरफ लोगों का जीवन यापन करना आसान हो गया , वहीं दूसरी ओर मशीन लोगों का जीवन बन गई। यह मनुष्य दिन-रात मशीन के साथ खटता रहा उसकी जीवन शैली भी वैसे ही बनती गयी। इस आधुनिक तकनीकी के कारण मनुष्य ही मनुष्य से दूर होता गया। उसके पास अपने परिवारिक-रिश्ते ,नाते में बातचीत करने के लिए भी समय नहीं रहा। जिसके कारण उसमें अलगाव की भावना उत्पन्न होने लगी। समाज में किसान दिन-रात मजदूरी करके जीवन यापन कर रहा है लेकिन मूलतः सत्ता के केंद्र में नहीं है। इसलिए वहआर्थिक दृष्टियों से वह और उसका परिवार कमकुवत,पिछड़ा ही रहा।

भारत का किसान अन्न उगाता है , जिस पर सभी जनता अपना जीवन-निर्वाह करती हैं परंतुआज की समाज-व्यवस्था मेंकिसान कोस्वतः ही उपजाये हुये अन्न का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार नहीं हैं ,यह भारत स्वतंत्रता के बाद भी विडम्बना रही है।ऐसा नहीं कि इससे कोई नेता , सरकार अनजान है बल्कि देखकर भी अंधा होने का दिखावा कर रहा है। यह हमारी सामाजिक व्यवस्थाका अपमान है। आज कोई किसी बड़े पद पर कार्यभार देख रहा / रही है लेकिन पहले वो किसी किसान, मजदूर माँ-बाप का लकड़ा या लड़की है मगर हम सत्ता आते ही असली यथार्थवाला जीवन भूल जाते है और हमको दूसरे का शोषण करना जीवन में किसी मेडल मिलने के समान लगता है । इसलिए ये दुनिया को कभी नहीं सुधार सकती क्योंकि वह अपने ही लोग अपनों को का ही गला दबाने व मारने के लिए तुले होकर जाति ,संप्रदाय, धर्म में बंटा है। वह भी अपना स्वतः जीवन बहुत अच्छी तरह से गुजर जाएगा लेकिन वे भूल जाते है परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है।

उत्तर आधुनिकता आने की क्यों जरूरत महसूस हुई जो समाज हाशिये पर गया था उसकी तरफ ध्यान दिया जाने लगा ,जिसमें दलित,स्त्री,आदिवासी,मुस्लिम,किसान, वृद्ध आदि को समाज में कोई अहमियत नहीं मिली थी । इसलिए उत्तर आधुनिकता का आना आवश्यक हुआ। समाज में लोगों का रहन-सहन,खान-पान तथा गीत-संगीत में बदलाव होने लगा। वे जिस चीज में बदलाव लाना चाहते थे उसमें बदलाव तो हो गया लेकिन कुछ अंतराल के बाद वे उससे भी ऊब-से गये और फिर

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

पारंपरिक संस्कार,रहन-सहन,खान-पान,रीति-रिवाज ,त्याहौर तथा लोक-संगीत की ओर उनमुक्त होने लगे।

हिन्दीसाहित्य में समय के साथ अलग-अलग विमर्श उभरते ही रहे। किसानही समाज व सत्ता के हाशिये पर चला गया। भारतीय राजनीति ने भी किसानजीवन में कोई विशेष सुधार नहीं हो पाया तथा राजनेता वर्ग ने उसकी समस्याओं को समझाने का प्रयास भी नहीं किया। इसलिए ये लोग समाज-व्यवस्था में जीवन यापन करते हुये भी गरीब ,पिछड़े,शिक्षा का अभाव ही रहा। इस समाज-व्यवस्था ने उनसे श्रम तो करवाता लेकिन उनको उचित मूल्य नहीं दे पाया है, अगर किसी किसान का माल या खाद्य किसी कारखाने में जाता है तो उसका वजन में कम आता है वे गरीबों को लुटाकर अपनी जेब भर रहे हैं।इस कारण किसान के बाल-बच्चे भी बाल-मजदूरी के लिए विवश हो गए। वर्तमान समय में किसानों की समस्या को समझना आवश्यक है, उसका परिवार बहुत गरीबी में जीवन जिता रहा है।

भारत सरकार की एक नीति मेरे ध्यान में नहीं आती है! 'किसान' की दिनचर्या या जीवन शैली व उसके जीवन क्षेत्र में बदलाव होना चाहिए परंतु नहीं हुआ! हमारे जिस क्षेत्र में बदलाव की आवश्यकता नहीं लेकिन उसमें ही बदलाव होता है। क्योंकि इससे पूँजीपति वर्ग को फाइदा होता है। किसान का उपजाया हुआ अन्न का मूल्य पूँजीपति वर्ग निर्धारित या तय करता है। यह बिचाराकिसान रात-दिन धूप, ठंड, बारिश मेहनत कराकर अन्न उगाता है जिसको बिजली या लाइट की दिन की जरुरत है वहाँ रात 4-5 घंटा लाइट आती है इस कारण उसे पूरी रात्र भर जागना पड़ता है वही कंपनी (बिजनेस) में 24 घंटे लाइट रहती है। सरकारी आफिसर को ठंड के समय में सुबह ग्यारह बजे आ सकते है लेकिन किसान क्या मनुष्य नहीं है क्या ? उसे सालभर उदा. तीस हजार है उसमें सब परिवार का खान-पान , त्याहौर , बच्चों की पढ़ाई , बीमारी आदि में कैसी परवरिश करता होगा ! मेरा राजनीतिक नेता से दो सवाल है एक आज किसान समाज का जीवन देखकर स्वत ही जीना , दूसरा आपको किसी क्षेत्र में क्या होना व किसकी चीज की आवश्यकता है ? इन सब परिस्थिति से परिचित होते हुए भी अनजान क्यों बनते जा रहे हैं! किसी गाँव के प्रधान को मालूम है गाँव के विकास के लिए किन-किन योजनाओं की आवश्यक है! वैसे ही तहसील , जिला, राष्ट्र, देश की स्थिति होती है। देश के उन्नति के लिए आधुनिक तकनीकी ,शिक्षा रोजगार, आरोग्य ,नई-नई योजना, मनुष्य की मूलभूत चीजों पुर्तता होना। क्योंकि इसका इतिहास गंवाह है कि बड़ी-बड़ी जानकारी भारत के लोगों ने लगाई है। 'राजर्षी शाहु महाराज कहा था शिक्षा के बिना कौन- से भी देश की उनत्ति नहीं हुई ये इतिहास

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

कहता है। अज्ञान में रककर लढने की वीरता कभी नहीं आ सकती। इसलिए सक्ती व मोफत शिक्षा की हिंदुस्तान को बहुत आवश्यकता है।'

हिन्दी साहित्य में मनोरंजन , तिलस्मी, ऐय्यारी, मिथक को आदि विषय को अधिक स्पेस मिला परंतु 'किसान'का यथार्थ इससे छूट ही गया। हिन्दी में किसान की व्यथा की तरफ पहली बार ध्यान लेखक प्रेमचंद की 'पुस की रात' कहानी ने किया,जिसमें 'हलकु' नील गाय के कारण जाड़े के दिन में अनाज की रखवाली करने लिए खेत में जाड़ी की रात काटता है। वहाँ पर थंड में ठिठुरता हुआ झबरा कुत्ता के पास ही सोता है।प्रेमचंद ने कथा साहित्य में 'किसान जीवन'के यथार्थ को बहुत गहराई के साथ (गोदान उपन्यास) में अपने लेखन के रूप में मुखरित किया है। कवि निराला , नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल,(काटों-काटों उस)अदम गोंडवी ने भी अपनी की कविताओं में किसान ,मजदूर, दलित, स्त्री जीवन की व्यथा व्यक्त होती है।किसान जीवन की व्यथा पर इतनी करोड़ भरपाई दी , लेकिन ये आकडे स्वतंत्र्यता के पहले भी समाज में स्थिति मौजूद थी और बाद में भी विद्यमान रही।कवि अदम गोंडवी की पंक्तिया है-

तुम्हायरी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आँकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है।

उधर जमहूरियत का ढोल पीटे जा रहे हैं वो
इधर परदे के पीछे बर्बरीयत है, नवाबी है।

लगी है होड़-सी देखो अमीरी औरगरीबी में
ये गांधीवाद के ढाँचे की बुनियादी खराबी है।

तुम्हाधरी मेज चाँदी की तुम्हाबरे ज़ाम सोने के
यहाँ जुम्मदन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है। (अदम गोंडवी)

इसमें भारत के ग्रामीण गाँवों की यथार्थ स्थिति व्यक्त होती है।इससे एक और महात्मा गांधीजी का 'ग्रामीण से ही भारत की पहचान है ' मत महत्तपुर्ण है। हिन्दी साहित्य में किसानों की आत्महत्या का यथार्थ चित्रण कथाकार संजीव का 'फाँस' (2015) उपन्यास में व्यक्त होता है। यह उपन्यास मूलतःमहाराष्ट्र के विदर्भ पर केन्द्रित है। किसानों की समस्या के कारण भारत के 3 लाख से ज्यादा

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

किसानों ने आत्महत्या की है तथा 80 लाख से अधिक किसानो ने किसानी छोड़ दी है। महाराष्ट्र का बहुसंख्य वर्ग किसान है।महाराष्ट्र को संतों की भूमि कहा जाता है और उनका काव्य ,भक्ति-संगीत लोगों की वाणी का आधार बना ,वही आज किसानों के परिवार में दुख ,तकलीफ,गरीबी में जीवन यापन कर रहा है। किसान को (बलीराजा) कहा गया लेकिन उसका अंधनगे-फटे कपड़े एवं भूखे पेट हल चलाते-चलाते पैसों के लिए विवश रह गया। किसान के चहरे पर न के बराबर खुशी दिखाई देती है बल्कि निराशा ही अधिक छाई हुई रहती है। समाज में किसानों की दशा बहुत ही दयनीय बनी हुई है। किसान पढ़ा-लिखा न होने के कारण उससे चतुर लोग उसके साथ छल-कपट करते हैं जिसे वो जल्दी समझ नहीं पाता है। किसान का स्वभाव भी सीधा-सरल होने के साथ समाज के चतुर याचालाक लोग उसकी मजदूरी का ज्यादा फायदा उठाते हैं। इसका उदा. हम लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'पच्चीस चौक डेढ़ सौ ' कहानी से समझ सकते हैं। किसान अपनी दिन-रात मेहनत-मजदूरी करता है लेकिन उसकी फसल का मूल्य तय वह बैठा हुआ ठेकेदार निश्चित करता है।इस संदर्भ में प्रेमपाल शर्मा कहते हैं- "उपन्यास के बहुत सत्य आपको चौकायेगे , सामाजिक सरोकार से जुड़े संजीव ने स्वंय विदर्भ और अन्यत्र के गावों में जा-जाकर इसके कारणों और दर्द को समझा है। औपन्यासिक कला और सरचना के स्तर पर चरित्र के विकास माटी की सोंधी महक से महमहाता यह एक अभूतपूर्व उपन्यास है। कलावती (छोटी) सिंधुताई ,शकुन,सुनील,अशोक, विजयेन्द्र , देवजी,तोपजी, दादाजी खोब्रागड़े आदि ही नहीं नाना और सदानंद जैसे पात्र और परिवेश अविस्मरणीय है। 'फाँस' उपन्यास खतरे की घंटी भी है आत्महत्या के विरुद्ध आत्मबल प्रदान करने वाली चेतना जमीनी संजीवनी का संकल्प भी "(हंस मई 2016)कथाकार संजीवअपने फांस उपन्यास में सामान्य प्रश्न की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं जंगल के फल -फूल,पत्ते,मद,मावा, पंछी आदि को परिस्थिति के अनुसार खाया जा सकता लेकिन वह जमीन पर पड़ कर नष्ट हो जायेंगे पर ग्रामीण भागों के मनुष्य ने खाया तो उस पर सरकारी दंड केसाथ कारवाई की जाती है।

आज के इस तकनीकी के युग में तंत्र का अधिक विकास हुआ है। आज़ादीके पहले और बाद में भी किसानों की समस्या पर उचित हल नहीं निकल पाया है। आज के समय में 'किसान आत्महत्या'यह एक ज्वलंत प्रश्न है।किसानों की स्थिति को देखा जाय तो सन 2016 के आरंभ में तीन महीने से ज्यादा सूखा पड़ने की वजह से 116 किसानों ने आत्महत्या की हैं उसमें महाराष्ट्र के 57,पंजाब के 56 तथा तेलंगाना में 3 किसानों ने आत्महत्या की थी।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

ग्रामीण भागों के किसान ने बारिश के कारण तीन-चार बार जमीन में बीज बोया था परंतु वह बर्बाद ही हुआ। इस बीज के लिए कई बार पैसे न होकर भी पत्नी के गहने बेचकर साहूकार तथा बैंक से कर्जा लेकर बीज खरीद लिया। उसका नतीजा हुआ कि कर्ज का बढ़ता ब्याज और सरकार की तरफ से कोई उम्मीद न होने के कारण किसान ने कई बार आत्महत्या की गई। जिसका यथार्थ चित्रणमराठी के कवि विट्ठल वाघ की पंक्तियों में होता है-

" सच कहा जाए तो साहेबराव

तुमने आत्महत्या नहीं की

हमने ही तुम्हारा खून किया...

तुम्हारा और तुम्हारे बीवी-बच्चों का

चौथी कक्षा में तुमने सभी विषय छोड़कर निबंध लिखा था।

भारत कृषि प्रधान देश है। खेती तुम्हारे जीवन की एक मात्र खुशी

वन्दे मातरम। सुजलाम सुफलाम। मलयज शीतकल।"

इस समाज-व्यवस्था में किसान अपने आप को लोकतंत्र में अछूता पाता है। जिसकी समस्या भी हल होने के बजाय दिनोंदिन कठिन ही होती जा रही है। इस संदर्भ में किशन पटनायक कहते हैं- "साधारण किसानों का बड़ा तबका असंगठित रहा। पिछले वर्षों में आधौगिक ,मज़दूरों,मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय सरकारी कर्मचारियों ने अपने माँगों को रखने के लिए अपने-अपने मजबूत संघठन बना लिए है। "(किसान आंदोलन: दशा और दिशा, किशन पटनायक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण2006) प्रस्तुत कथन से देखा जाए तो समाज में बहुत कम समाज संगठित रहाहै। इसलिए वह अपने खेती के क्षेत्र में विकास नहीं करा पाया है। उस भोले-भाले किसान को चुनाव नजदीक आने से यह राजनेता लोग झूठे वादे किसानों से करते हैं लेकिन उनकी समस्या का हल बहुत ही कम निकल पाया है। इस समाज-व्यवस्था में किसान,दलित, आदिवासी अपने आपको पीटता ही पाता आ रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- "जो यह नहीं जानते हैं कि किसानों के झोपडों के भीतर क्या हो रहा है , वे यदि बने-ठने मित्रों के बीच प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

देशप्रेम का दावा करें तो उनसे पूछना चाहिए की भाइयों बिन रुप परिचय के यह प्रेम कैसा ? जिनके दु:ख के तुम कभी साथी नहीं हुये उन्हें तुम सुखी देखना चाहते हो यह कैसे समझे। हिसाब-किताब करने वाले भाड़े पर मिल सकते हैं प्रेम करने वाले नहीं।" (आ.रामचन्द्र शुक्ल ,चिंतामणि, काव्य में प्राकृतिक दृश)इस तरह आ. रामचन्द्र शुक्ल भारतीय राजनेता तथा बुद्धिजीवियों पर व्यंग्य करते है। समाज में हर समाज की अपनी एक विडम्बना है। मजदूरों का एक वर्ग दिन-रात मेहनत-मजदूरी करता है लेकिन मूल्य कम ही प्राप्त है वही दूसरा वर्ग मेहनत भी न के बराबर करता परंतु उसका मूल्य इससे ज्यादा है।शिव पूजन सहाय जी ने एक पत्र में सुधांश जी को आप बीती बताते हुये लिखा है "कवियों के लिए किसान बड़े भोले-भाले हैं दूध के धाये हुए हैं ,पर मुझे जो यहाँ अनुभव हुआ उसको क्या बताऊँ ! लोग खेत की फसल चरा लेते हैं , लोग पौधों को काट देते हैं। बात-बात में झगड़ा-फसाद। जिसके मुंह में बोल नहीं वह गाँव में नहीं रह सकता है। मैंने जो साहित्यिकों की बहुत सी चिट्ठीया सँजोई थीं,अखबरारों की कतरने जमा की थी , सबको बदमाशों ने कुएं में डाल दिया। अपनी मुसीबत क्या बताऊँ किसान भोले भाले हैं"(राजभाषा भारती अंक147 अप्रैल-जून 2016 पृष्ठ सं18)

भारत में किसान अनाज उगाता है लेकिन उसका जीवन बहुत कठिनाईयों से बीतता है। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण खान-पान ,रहन-सहन भी बहुत निचले स्तर का रहता है। किसान को सामाजिक स्तर पर बहुत ठीक तरह से पहचान नहीं मिल पायी है। उसके साथ ही राजनीति में भी कोई विशेष दर्जा प्राप्त नहीं हुआहै। इसी गरीबी के कारण परिवार में बच्चे बाल-मजदूरी करते रहते हैं।उनके बच्चों में शिक्षा के प्रति ज्यादा लगाव नहीं रह पाता है।

आज वर्तमान समय में शहरों की अपेक्षा ग्रामीण भागों में किसानों का जीवन बड़ी कठिनाईयों में व्यथित हो रहा है। किसान परिवार में फसल को अच्छा मूल्य न मिलना एवं उसी स्थिति में चार-पाँच बच्चे की परवरिश तथा साहूकार के कर्ज का अतिरिक्त ब्याज को अदा करना है । इन सब समस्या से त्रस्त होकर वह आत्महत्या की ओर बढने लगा और उसमें ये बढ़ती महंगायों में बच्चों की पढ़ाई तथा लड़कियों की शादी में दहेज देना इन सबका बोझ उठाते-उठाते थक जाता है। इसलिए वह सब समस्या से थक कर आत्महत्या करके अपने जीवन को समाप्त करता है। यही महाराष्ट्र के विदर्भ के किसान आत्महत्या का मूलतः कारण रहा है। अभी हल में ही उदा. महाराष्ट्र के लातूर में पीने का

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

पानी रेल्वे से पहुँचा गया। इससे समझ सकते हैं किसान अपने जीवन में संघर्ष करता ही रहता है। कभी वह सूखे की मार सहता है तो कभी बारिश से सबकुछ गंवा देता है।

इसी तरह से कई क्षेत्रों में बारिश न होने के कारण किसानों की फसलें बर्बाद होती है परंतु इसके बावजूद भी सरकार जनता को सूखा राहत राशि नहीं देती है । यह सरकार जन-कल्याण की ओर आंखे बंदकर केवल पूँजीपतियों की तर फ देख रही है । जिसमें गरीब और अधिक गरीब तथा अमीर और अधिक अमीर होते जा रहे हैं। भारत में किसान आत्महत्या की संख्या महाराष्ट्र में सर्वाधिक दिखाई देती है। इस प्रकार की घटना को रोखना आवश्यक है। इसके लिए सभी भारतीयों को साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। किसान के जीवन में सुधार होना चाहिए । इसलिए सरकार को प्रति वर्ष ऐसी नई-नई सुख-सुविधा लाना जरूरी है। जिससे किसान के जीवन स्तर में वृद्धि हो सकें। उसके साथ परिवार में बच्चे बाल-मजदूरी की तरफ न बढ़कर शिक्षा की ओर अग्रसर हो जाए और उनके बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो जाएँ।इस प्रकार से किसान के जीवन में सुधार हो सकता है।

संदर्भ सूची :

हंस मई 2016
राजभाषा भारती अंक147 अप्रैल-जून 2016 पृष्ठ सं18
किसान आंदोलन: दशा और दिशा, किशन पटनायक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2006
संजीव 'फाँस' वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2015